पत्र सूचना शाखा
(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मुख्यमंत्री ने गोरखपुर के कैम्पियरगंज विधान सभा क्षेत्र में 491 करोड़ रु0 से अधिक की लागत से 123 एकड़ से अधिक क्षेत्रफल पर निर्मित होने वाले उ0प्र0 के प्रथम वानिकी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय का भूमि पूजन किया

मुख्यमंत्री ने 792 करोड़ रु0 अधिक की 55 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया

यह वानिकी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने का माध्यम नहीं होगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, कृषि विकास, किसानों की आय में वृद्धि और युवाओं के रोजगार का महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगा : मुख्यमंत्री

यहां सिल्वीकल्चर एवं एग्रो फॉरेस्ट्री विज्ञान की पढ़ाई होगी, विद्यार्थियों को बी0एस0सी0, एम0एस0सी0 और पी0एच0डी0 की डिग्रियां प्राप्त करने का अवसर मिलेगा

विश्वविद्यालय को वन विभाग के अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में भी विकसित किया जाना चाहिए

यहां आधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित की जानी चाहिए और टिश्यू कल्चर के माध्यम से एग्रो फॉरेस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए शोध कार्य किए जाने चाहिए

किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए पारम्परिक खेती के साथ एग्रो फॉरेस्ट्री को बढ़ावा देना आवश्यक

यदि कोई अन्नदाता किसान अपनी फसल के साथ खेत की मेड़ पर सागौन, शीशम, पॉपुलर, यूकेलिप्टस और बबूल जैसे पेड़ लगाना चाहता, तो उसे इसके लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, सरकार इस दिशा में शीघ्र ही नियमों में संशोधन करने जा रही

औद्यानिकी के क्षेत्र में किसानों को नए बीज, नई तकनीक और उन्नत किस्में उपलब्ध कराई जाएंगी

हाल की आपदा से प्रभावित किसानों को मुआवजे के अतिरिक्त, अलग से विशेष पैकेज दिया जाएगा, जिससे उन्हें राहत मिल सके

चौक माफी में 70 एकड़ भूमि पर स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के प्रशिक्षण का बेहतरीन केन्द्र बन चुका

प्रधानमंत्री जी ने मन की बात कार्यक्रम में 12 जुलाई, 2026 को उ0प्र0 के इतिहास का महत्वपूर्ण दिन बताया, इस दिन प्रदेश के वन विभाग के नेतृत्व में प्रदेश की जनता ने एक ही दिन में 35 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण करके रिकॉर्ड बनाया

लखनऊ : 19 नवम्बर, 2026

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण भारतीय संस्कृति और ऋषि परम्परा का अभिन्न हिस्सा रहा है। वैदिक परम्परा में कहा गया है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात धरती हमारी माता है और हम सभी इसके

पुत्र हैं। भारतीय संस्कृति में वन के प्रत्येक वृक्ष में देवता का वास और प्रत्येक नदी में देवी का स्वरूप देखा गया है। धरती को माता मानने की हमारी परम्परा हमें उसके संरक्षण की जिम्मेदारी का भी बोध कराती है। पर्यावरण का अत्यधिक दोहन ही अतिवृष्टि, अनावृष्टि और ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं का एक महत्वपूर्ण कारण है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए गम्भीर प्रयास आवश्यक हैं।

मुख्यमंत्री जी आज जनपद गोरखपुर के कैम्पियरगंज विधान सभा क्षेत्र में 491 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 123 एकड़ से अधिक क्षेत्रफल पर निर्मित होने वाले उत्तर प्रदेश के प्रथम वानिकी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय के भूमि पूजन सहित 792 करोड़ रुपये अधिक की 55 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करने के पश्चात आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने कार्यक्रम स्थल पर पौधरोपण तथा परिसर का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व वर्ष 2024 में जब वह यहां आए थे, तब जटायु संरक्षण केन्द्र की स्थापना का कार्य प्रारम्भ कराया गया था। भारतीय सनातन परम्परा में कृतज्ञता का विशेष महत्व है। जिसने हमारे प्रति कोई उपकार किया है, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। इसी भावना के साथ हमें अपने पूर्वजों, सांस्कृतिक परम्पराओं और प्राकृतिक विरासत का संरक्षण करना चाहिए। उस समय यह महसूस किया गया था कि जटायु संरक्षण के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण, अन्नदाता किसानों की आय में वृद्धि और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करने की दिशा में भी प्रयास आवश्यक हैं। इसी उद्देश्य से वानिकी एवं औद्यानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। प्रदेश के वन विभाग ने निर्धारित समय–सीमा में विश्वविद्यालय की स्थापना प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए इसका एक्ट पारित कराया तथा सभी औपचारिकताएं पूरी कीं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने का माध्यम नहीं होगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, कृषि विकास, किसानों की आय में वृद्धि और युवाओं के रोजगार का महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगा। यहां सिल्वीकल्चर एवं एग्रो फॉरेस्ट्री विज्ञान की पढ़ाई होगी। विद्यार्थियों को बी0एस0सी0, एम0एस0सी0 और पी0एच0डी0 की डिग्रियां प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित युवा फॉरेस्ट गार्ड, फॉरेस्टर, वन रेंजर, ए0सी0एफ0 और डी0एफ0ओ0 जैसे पदों पर अपनी सेवाएं दे सकेंगे। वे सीधी भर्ती, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग और अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से भी विभिन्न सेवाओं में जा सकेंगे।

मुख्यमंत्री जी ने विश्वविद्यालय को वन विभाग के अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में भी विकसित करने पर बल देते हुए कहा कि यहां

आधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित की जानी चाहिए और टिश्यू कल्चर के माध्यम से एग्रो फॉरेस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए शोध कार्य किए जाने चाहिए। विश्वविद्यालय में वानिकी, औद्यानिकी और कृषि से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के साथ शोध एवं प्रशिक्षण गतिविधियों को भी आगे बढ़ाया जाएगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि विश्वविद्यालय का निर्माण निर्धारित समयसीमा में पूरा कराया जाएगा। अगले शैक्षणिक सत्र से यहां कक्षाएं प्रारम्भ कराई जाएंगी। प्रारम्भ में किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर कक्षाएं संचालित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय भवन का निर्माण पूरा होने के साथ ही परिसर में शैक्षणिक गतिविधियों का विस्तार किया जाएगा। वानिकी, औद्यानिकी, कृषि और एग्रो फॉरेस्ट्री से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों के साथ शोध एवं प्रशिक्षण की गतिविधियों को भी तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण, किसानों की आय में वृद्धि और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए पारम्परिक खेती के साथ एग्रो फॉरेस्ट्री को बढ़ावा देना आवश्यक है। यदि कोई अन्नदाता किसान अपनी फसल के साथ खेत की मेड़ पर सागौन, शीशम, पॉपुलर, यूकेलिप्टस और बबूल जैसे पेड़ लगाना चाहता है तो उसे इसके लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सरकार इस दिशा में शीघ्र ही नियमों में संशोधन करने जा रही है, जिससे किसानों को बिना अनावश्यक परेशानी के पेड़ लगाने की अनुमति मिल सके। किसान 10 नए पेड़ लगाकर उनका सत्यापन कराएं और उसके बाद उन्हें काटकर अपनी उपज से आय अर्जित कर सकें।

औद्यानिकी के क्षेत्र में किसानों को नए बीज, नई तकनीक और उन्नत किस्में उपलब्ध कराई जाएंगी। सब्जियों की मांग लगातार बढ़ रही है। किसान अच्छी गुणवत्ता वाली जैविक सब्जियों का उत्पादन कर सकते हैं। गोरखपुर का बड़ा बाजार उनके लिए उपलब्ध है और लखनऊ भी यहां से लगभग तीन घण्टे की दूरी पर है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में केले की खेती की शुरुआत कैम्पियरगंज के किसानों ने की थी। यहां के किसानों ने गन्ने की खेती के साथ केले की खेती करके अच्छी आमदनी प्राप्त की थी। बाद में कुशीनगर, खड्डा और बिहार के क्षेत्रों में केले की खेती का विस्तार हुआ। अब टिश्यू कल्चर के माध्यम से केले के पौधों के टिश्यू मंगाकर स्थानीय स्तर पर ही इसकी खेती को बढ़ावा देने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के माध्यम से आलू के अच्छे बीज उपलब्ध कराए जाएंगे। टिश्यू कल्चर तकनीक से अदरक, हल्दी, केला, आंवला और आम सहित औद्यानिकी से जुड़ी विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जाएंगी और उन्हें किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि चौक माफी में 70 एकड़ भूमि पर कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किया गया है। आज यह किसानों के प्रशिक्षण का बेहतरीन केन्द्र बन चुका है। यहां किसानों को प्रशिक्षण, उन्नत बीज और आधुनिक तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में 12 जुलाई, 2026 को उत्तर प्रदेश के इतिहास का महत्वपूर्ण दिन बताया था। इस दिन प्रदेश के वन विभाग के नेतृत्व में प्रदेश की जनता ने एक ही दिन में 35 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण करके रिकॉर्ड बनाया। विगत साढ़े नौ वर्षों में प्रदेश सरकार ने 280 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण कराया है। इससे प्रदेश में वृक्षारोपण और हरित क्षेत्र के विस्तार में सफलता मिली है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सरकार केवल आपदा आने पर संवेदना व्यक्त नहीं करती, बल्कि प्रभावित लोगों की सहायता और समस्या के समाधान के लिए भी कार्य करती है। पिछले दिनों जब किसानों की धान, केले और सब्जियों की फसलें खड़ी थीं, उसी समय अतिवृष्टि एवं ओलावृष्टि के कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। अन्नदाता किसान मेहनत करके फसल तैयार करता है, लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण उसे भारी नुकसान का सामना करना पड़ता है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से किसानों को सुरक्षा प्रदान की जा रही है। आपदा से हुए नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजे की राशि भी निर्धारित समयसीमा में उपलब्ध कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री जी ने बताया कि उन्होंने स्वयं गोरखपुर आकर आपदा से प्रभावित किसानों को 500 करोड़ रुपये का मुआवजा वितरित किया था। उन्होंने आश्वस्त किया कि हाल की आपदा से प्रभावित किसानों को मुआवजे के अतिरिक्त, अलग से विशेष पैकेज भी दिया जाएगा, जिससे उन्हें राहत मिल सके।

गोरखपुर और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पिछले वर्षों में विकास एवं जनसुविधाओं का विस्तार हुआ है। पहले गोरखपुर की पहचान माफिया और मच्छर से होती थी। इन्सेफेलाइटिस के कारण मासूम बच्चों की मौतें होती थीं। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गरीब और वंचित परिवारों को गम्भीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। क्षेत्र की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं गोरखपुर से सोनौली तक 04–लेन सड़क, जंगल कौड़िया में महाविद्यालय, कैम्पियरगंज में डिग्री कॉलेज, पूर्व मुख्यमंत्री स्व0 वीर बहादुर सिंह और बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के नाम पर इण्टर कॉलेजों का निर्माण, स्टेडियम की स्थापना तथा बाढ़ से बचाव के कार्य किये गये हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि विगत साढ़े नौ वर्षों में प्रदेश में 65 लाख परिवारों को एक–एक आवास उपलब्ध कराया गया है। फरेंदा के वनटागिया गांव में पहले लोगों के

पास केवल झोपड़ियां थीं, लेकिन आज उनके पास पक्के मकान, स्कूल, आंगनबाड़ी, पेंशन, राशन कार्ड और आयुष्मान कार्ड की सुविधा उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 16 करोड़ गरीबों को राशन की सुविधा का लाभ दिया जा रहा है। 10 करोड़ लोग आयुष्मान भारत योजना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना और मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अन्तर्गत युवाओं को ब्याजमुक्त एवं गारण्टीमुक्त ऋण उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। बेटी के जन्म से लेकर उसके विवाह तक सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान कर रही है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत बेटी के विवाह के लिए एक लाख रुपये की सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रदेश में 4,500 से अधिक मन्दिरों के पुनरुद्धार और सुन्दरीकरण का कार्य कराया जा रहा है। इसके साथ ही प्रदेश के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर, सतगुरु रविदास जी महाराज, महर्षि वाल्मीकि और संत कबीरदास जी से सम्बन्धित मूर्तियों एवं पार्कों के सुन्दरीकरण के लिए भी धनराशि जारी की गई है। क्षेत्र में लेहड़ा माई का स्थान आज भव्य स्वरूप में विकसित हो चुका है। पहले वहां सड़क और अन्य सुविधाओं का अभाव था। आज लाखों श्रद्धालु वहां दर्शन करने जाते हैं।

भगवान श्रीराम और निषादराज की मित्रता भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसी परम्परा के सम्मान में प्रयागराज के श्रृंगवेरपुर में भगवान श्रीराम और निषादराज की 56 फीट ऊंची गले मिलती हुई प्रतिमा स्थापित की गई है। वहां निषादराज की ऐतिहासिक विरासत को भी सम्मान दिया गया है। इसी प्रकार बहराइच में महाराजा सुहेलदेव का भव्य स्मारक बनाया गया है। अपने पूर्वजों और महापुरुषों की परम्पराओं को सम्मान देना हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री जी ने देवोत्थान एकादशी की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि चार महीने के विश्राम के बाद भगवान श्रीहरि विष्णु के जागृत होने के साथ ही सभी पर्व एवं त्योहार प्रारम्भ होंगे।

कार्यक्रम को केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री पंकज चौधरी, प्रदेश सरकार के मत्स्य मंत्री श्री संजय निषाद, वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ0 अरुण कुमार सक्सेना तथा सांसद श्री रवि किशन शुक्ल ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर वन, पर्यावरण, जन्तु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री श्री के0पी0 मलिक सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

————————